B.Com. (HONS)
P1 — A/c & Fin. (H)
Paper – I
Financial Accounting
Date- 29.05.2020

प्रो० धनंजय कुमार
सहायक प्राध्यापक
वाणिज्य विभाग
V.S.J. महाविद्यालय
राजनगर (मधुबनी)

UNIT – I
TOPIC – ACCOUNTING CYCLE

FINAL ACCOUNTS

लेखांकन अवधि के पश्चात् प्रत्येक व्यवसायी अपनी व्यावसायिक क्रियाओं का परिणाम जानना चाहता है. यों कहें कि वह व्यवसाय से होने वाले लाभ-हानि की गणना करने को उत्सुक होता है. साथ-ही साथ यह भी जानना चाहता है कि लेखा अवधि के पश्चात् उसकी संपत्ति एवं दायित्व की क्या स्थिति है. इन सभी उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए व्यापारी जिन विवरणों को तैयार करता है, उसे वित्तीय विवरण (Financial statement) या अंतिम खाते (final Account) कहा जाता है.

कुछ विद्वानों ने इसे निम्न प्रकार से परिभाषित किया है:—

(i) जॉन एन मेयर के अनुसार — "वित्तीय विवरण व्यवसाय के खातों का संक्षिप्त विवरण है, जिसमें आर्थिक चिट्ठा एक निश्चित तिथि को सम्पत्तियों, दायित्व एवं पूंजी को प्रदर्शित करता है तथा आय विवरण एक निश्चित अवधि के अंतर्गत क्रियाओं के परिणामों को दर्शाता है."

(ii) स्मिथ एवं अशबर्न के अनुसार — "वित्तीय लेखांकन का अंतिम उत्पाद वित्तीय विवरणों का एक सेट है, जिन्हें व्यवसाय की वित्तीय स्थिति को दर्शाने के लिए तैयार किया जाता है, वर्तमान क्रियाओं के परिणामों एवं आय के साथ क्या किया गया है, दिखाया जाता है."

उपर्युक्त परिभाषा से यह स्पष्ट होता है कि वित्तीय विवरण एक ऐसा लेखांकन विवरण है जो यह बताता है कि एक निश्चित लेखांकन अवधि के अंतर्गत व्यावसायिक क्रियाओं के पश्चात परिणामस्वरूप कितना लाभ हुआ या हानि तथा वित्तीय वर्ष के अंत में व्यवसाय के पास कितनी संपत्तियाँ व दायित्व है।

अंतिम खाते का निर्माण तलपट की सहायता से की जाती है. इसके अंतर्गत मुख्य रूप से व्यापारिक खाते, लाभ-हानि खाते एवं स्थिति विवरण को शामिल किया जाता है. लेकिन निर्माणी संस्था द्वारा व्यापारिक खाता बनाने से पूर्व निर्माणखाता (Manufacturing Account) तैयार किया जाता है. उसखाते से उत्पादन लागत (Cost of Production) ज्ञात किया जाता है।

1. व्यापारिक खाता
TRADING ACCOUNT

व्यवसायी द्वारा Gross Profit (सकल लाभ) या Gross loss (सकल हानि) ज्ञात करने हेतु व्यापारिक खाता बनाया जाता है. यह मुख्यतः माल के क्रय-विक्रय एवं इससे संबंधित प्रत्यक्ष खर्चों को प्रदर्शित करता है. इसमें कार्यालय संबंधी खर्चों को नहीं दिखाया जाता है. सकल लाभ मुख्यतः विक्रय एवं बेचे गये माल की लागत का अंतर होता है. इसे निम्न प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है :—

Gross Profit = Net Sales − Cost of Goods Sold

Net Sales = Total Sales − Sales Return

Cost of Goods Sold = Opening Stock + Net Purchases + Direct Expenses − Closing Stock

Net Purchases = Total Purchases − Purchases Return

Gross loss = Cost of Goods Sold − Net Sales

नोट:— प्रत्यक्ष खर्चों में माल के मंगाने एवं निर्माण से संबंधित खर्चों को शामिल किया जाता है।

Scanned with CamScanner

व्यापारिक खाते का निर्माण निम्नलिखित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु किया जाता है :—

- (i) सकल लाभ या हानि का निर्धारण करने
- (ii) प्रत्यक्ष खर्चों का सकल लाभ से संबंध स्थापित करने।
- (iii) बेचे गये माल की लागत का निर्धारण करने।
- (iv) सकल लाभ अनुपात की गणना करने।
- (v) चालू वर्ष के स्टॉक की पिछले वर्ष के स्टॉक से तुलना करने।
- (vi) वास्तविक उपलब्धियों की अपेक्षित उपलब्धियों से तुलना करने तथा
- (vii) चालू उपलब्धियों की पिछली उपलब्धियों से तुलना करने।

(2) लाभ-हानि खाता

PROFIT AND LOSS ACCOUNT.

चूँकि व्यापारिक खाता से माल के क्रय-विक्रय के परिणामस्वरूप सकल लाभ या सकल हानि की जानकारी प्राप्त होती है, जबकि व्यवसायी का प्रमुख उद्देश्य शुद्ध लाभ या शुद्ध हानि ज्ञात करना होता है। शुद्ध लाभ की गणना करने के लिये यह आवश्यक है कि लाभ-हानि खाता बनाया जाये। अतः लाभ-हानि खाता वैसे खाता है जिसमें समस्त आय-व्यय को लेखांकित किया जाता है एवं जिससे आय की व्यय से तथा व्यय की आय से अधिकता ज्ञात की जाती है।

लाभ हानि खाते का उद्देश्य

- (i) शुद्ध लाभ या शुद्ध हानि ज्ञात करने।
- (ii) शुद्ध लाभ का विक्रय के बीच संबंध स्थापित करने।
- (iii) खर्चे एवं विक्रय के बीच संबंध स्थापित करने।
- (iv) वास्तविक उपलब्धि की नियोजित उपलब्धि से तुलना करने।
- (v) कोष की व्यवस्था करने तथा
- (vi) भविष्य की प्रभावी योजनाओं का निर्धारण करने।

Scanned with CamSc

कुछ ऐसे खर्चे जिन्हें लाभ-हानि खाते में नहीं दिखाया जाता है निम्न लिखित है: —

(a) प्रत्यक्ष खर्चे जो माल की प्राप्ति व उत्पादन से संबंधित होती है।

(b) पूँजीगत व्यय जो संपत्तियों के क्रय व उसमें विस्तार से संबंधित होती है।

(c) आयकर (Income Tax) चूँकि यह व्यापारी की व्यक्तिगत आय पर लगाया जाता है।

(d) निजी व घरेलू खर्चे तथा

(e) जीवन बीमा प्रीमियम।

(3) आर्थिक चिट्ठा या स्थिति विवरण।
BALANCE SHEET

स्थिति विवरण व्यवसाय का एक दर्पण है जो किसी विशेष तिथी को संपत्ति एवं दायित्व के मूल्यों को प्रकट करता है। जिससे व्यवसाय की आर्थिक स्थिति की जानकारी प्राप्त होती है। लेखांकन समीकरण के अनुसार Balance sheet का सार निम्नलिखित होता है —

$$Assets = Capital + Liabilities$$

स्थिति विवरण की विशेषता :—

(i) यह खाता नहीं बल्कि एक विवरण होता है।

(ii) किसी निश्चित तिथीपर तैयार करना।

(iii) संपत्ति एवं दायित्व का विवरण होना

(iv) आर्थिक स्थिति का दर्पण होना तथा

(v) संपत्ति एवं दायित्वों का जोड़ सदैव बराबर होना।

Scanned with CamSc